PROF. (DR.) RAM CHANDER SIHAG

Prof. (Dr.) Ram Chander Sihag is a world renowned beekeeping and pollination scientist.

2. Born on 5th January, 1952, Prof. (Dr.) Sihag graduated in Biology in 1973, received his Masters degree in Zoology in 1975 and Ph.D. in Zoology (Apiculture) in 1980. He joined Haryana Agricultural University, Hisar as a Honey bee Scientist on November 23, 1979 and worked there till January 31, 2012. During his tenure at Haryana Agricultural University, he made highly significant and outstanding contributions in research and extension in the discipline of beekeeping and crop pollination ecology. His works led to the development of a huge Beekeeping industry in the State of Haryana and later in India. Since February 1st, 2012, he has been working as an independent researcher and an extension worker for the benefit of beekeepers and farmers of the country.

3. Prof. (Dr.) Sihag is credited with the introduction, establishment and expansion of beekeeping in the semi- arid and hot environments of Haryana and India. In 1982, he started annual beekeeping trainings for the farmers, ex-servicemen, Agriculture and Home science graduates and women in Agriculture. On the basis of his researches, he standardized the management practices for Mellifera Beekeeping in India. With these recommendations and the availability of adapted stock of European honey bee for semi-arid and hot environments, its expansion in the country became easy, and thus Mellifera Beekeeping reached every nook and comer of the country.

4. The persistent, dedicated and unstinted efforts of Prof. (Dr.) Sihag have enabled the country in rearing and raising the European honeybee colonies from merely 5 thousand in 1980 (producing only 50 tons of honey annually) to 50 thousand colonies by 1990 (producing 5000 tons of honey annually), and to a highly respectable 3.5 million colonies at present producing more than 100 thousand metric tons of honey, 10 thousand metric tons of beeswax, and tons of pollen. Beside this, this venture has helped generating self employment for more than 100 thousand rural and urban unemployed youths, and providing pollination service to over 2.5 million acres of cross-pollinated plants, thus adding annually about 1200 billion to the GDP of the country.

5. Prof. (Dr.) Sihag was elected Fellow of the highly prestigious Royal Entomological Society, London in 1997. Since 1992, he has been the Chairperson of Pollination Section of Asian Apicultural Association (headquarters in China). Presently, he is the Academic Editor of International Journal of Ecology (since 2009), Editor-in-Chief of Journal of Entomology (Since 2016); Editor of Journal of Ecology and the Natural Environment (since 2018); Regional Editor of other 4 International Journals (since 2012) and Associate Editor of still other 2 International Journals (since 2013). Earlier, he remained Editor of Indian Bee Journal for 5 years-(1990-1994). He is also a member of the editorial board of other 15 National and International Journals. Due to his outstanding contributions for the farmers and beekeepers of the country, Door Darshan (Kisan), has put him in the prestigious group of 'Kisano Ke Mahanayak (Great Heroes of Farmers)'.

6. Prof. (Dr.) Sihag has been honoured with several awards for his outstanding contributions for beekeeping profession and beekeeping science. These include highly prestigious Rafi Ahmed Kidwai Memorial Prize (1980-82) by the Indian Council of Agricultural Research, New Delhi; Group Award-cum-Certificate of Appreciation (1993) by the United States Department of Agriculture (USA); and Scroll of Honour (2005) in the International Conference on Plant Sciences at Amravati (India): Life Time Achievement Award by the Environment Society of India, Chandigarh (2007); E. P. Odum Memorial Award by the Educational, Cultural and Social Welfare Society of India, Hisar (2008); and Ambedkar Fellowship Award (1998) for his distinguished social services.

प्रो. (डॉ.) राम चन्द्र सिहाग

प्रो. (डॉ.) राम चन्द्र सिहाग विश्व प्रसिद्ध मधुमक्खी पालन व परागण वैज्ञानिक हैं।

2. 5 जनवरी, 1952 को जन्मे, प्रो. (डॉ.) सिहाग ने 1973 में जीव विज्ञान में स्नातक की डिग्री प्राप्त की, 1975 में प्राणी शास्त्र में मास्टर्स डिग्री हासिल की और 1980 में प्राणी शास्त्र (मधुमक्खीपालन) में पीएच.डी. किया। 23 नवंबर, 1979 को उन्होंने हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार में मधुमक्खी वैज्ञानिक के रूप में कार्यभार संभाला और 31 जनवरी, 2012 तक वहां काम किया। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने मधुमक्खी पालन और क्रॉप पॉलिनेशन इकोलॉजी के क्षेत्र में शोध और विस्तार में बहुत ही महत्वपूर्ण और असाधारण योगदान दिए। उनके प्रयासों से हरियाणा राज्य और बाद में भारत में एक विशाल मधुमक्खी पालन उद्योग का विकास हुआ। 1 फरवरी 2012 से, वह देश के मधुमक्खी पालकों और किसानों के लाभ हेतु एक स्वतंत्र शोधकर्ता और एक विस्तार कार्यकर्ता के रूप में काम कर रहे हैं।

3. प्रो. (डॉ.) सिहाग को हरियाणा और भारत के अर्ध–शुष्क और गर्म वातावरण में मधुमक्खी पालन की शुरुआत करने, स्थापना और विस्तार करने का श्रेय जाता है। 1982 में, उन्होंने किसानों, पूर्व सैनिकों, कृषि और गृह विज्ञान स्नातकों तथा कृषि के क्षेत्र में महिलाओं के लिए वार्षिक मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण शुरू किया। अपने शोध के आधार पर, उन्होंने भारत में मेलिफ़ेरा मधुमक्खी पालन के लिए प्रबंधन प्रणाली का मानकीकरण किया। उनकी सिफारिशों और अर्ध–शुष्क व गर्म वातावरण के लिए यूरोपीय मधुमक्खी के अनुकूलित स्टॉक की उपलब्धता के साथ, देश में इसका विस्तार आसान हो गया, और इस प्रकार मेलिफेरा मधुमक्खी पालन देश के कोने–कोने तक पहुंचा।

4. प्रो. (डॉ.) सिहाग के अनवरत, समर्पित और अथक प्रयासों ने देश को 1980 में सिर्फ 5 हजार यूरोपीय मधुमक्खी कालोनियों (सालाना सिर्फ 50 टन शहद का उत्पादन) से बढ़ाकर 1990 में 50 हजार कालोनियों (सालाना 5000 टन शहद का उत्पादन) और वर्तमान में 35 लाख कालोनियों तक पहुंचाया जिनमें 100 हजार मीट्रिक टन से अधिक शहद, 10 हजार मीट्रिक टन मधुमक्खी मोम और टनों परागण का उत्पादन होता है। इसके अलावा, इस उद्यम ने एक लाख से अधिक ग्रामीण और शहरी बेरोजगार युवाओं के लिए स्वरोजगार पैदा करने में मदद की है, तथा 2.5 मिलियन एकड़ से अधिक क्रॉस–परागण वाले पौधों को परागण सेवा प्रदान की है। इससे देश के सकल घरेलू उत्पादन में सालाना लगभग 1200 अरब की वृद्धि हुई है।

5. प्रो. (डॉ.) सिहाग को 1997 में बहुत ही प्रतिष्ठित रॉयल एंटोमोलॉजिकल सोसाइटी, लंदन का फेलो चुना गया था। 1992 से, वह एशियन एपीकल्चरल एसोसिएशन (चीन में मुख्यालय) के परागण अनुभाग के अध्यक्ष रहे हैं। वर्तमान में, वह इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इकोलॉजी (2009 से) के अकादमिक संपादक, जर्नल ऑफ एंटोमोलॉजी (2016 से) के प्रधान संपादक; जर्नल ऑफ़ इकोलॉजी एंड द नेचुरल एनवायरनमेंट के संपादक (2018 से); 4 अन्य अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं के क्षेत्रीय संपादक (2012 से) और अन्य 2 अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं के एसोसिएट संपादक (2013 से) हैं। इससे पहले वह 5 वर्षों (1990–1994) तक इंडियन बी जर्नल के संपादक रहे। वह अन्य 15 राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं के संपादकीय बोर्ड के सदस्य भी हैं। देश के किसानों और मधुमक्खी पालकों के लिए उनके असाधारण योगदान के कारण, दूरदर्शन (किसान) ने उन्हें 'किसानों के महानायक' के प्रतिष्ठित समूह में शामिल किया है।

6. प्रो. (डॉ.) सिहाग को मधुमक्खी पालन के व्यवसाय और मधुमक्खी पालन विज्ञान में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इनमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली का प्रतिष्ठित रफी अहमद किदवई मेमोरियल पुरस्कार (1980–82); संयुक्त राज्य अमेरिका के कृषि विभाग (यूएसए) द्वारा ग्रुप अवार्ड कम सर्टिफिकेट ऑफ एप्रीसिएशन (1993); और अमरावती (भारत) में पादप विज्ञान पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में स्क्रॉल ऑफ ऑनर (2005): एनवायरनमेंट सोसाइटी ऑफ इंडिया, चंडीगढ़ द्वारा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड (2007); एजुकेशनल, कल्चरल एंड सोशल वेलफेयर सोसाइटी ऑफ इंडिया, हिसार द्वारा ईपी ओडम मेमोरियल अवार्ड (2008); और उनकी विशिष्ट सामाजिक सेवाओं के लिए अम्बेडकर फेलोशिप पुरस्कार (1998) शामिल हैं।